वां विश्व हिन्दी सम्मेलन
२२-२४ सितम्बर, २०१२
जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका

हिंदी का वैश्विक परिदृश्य

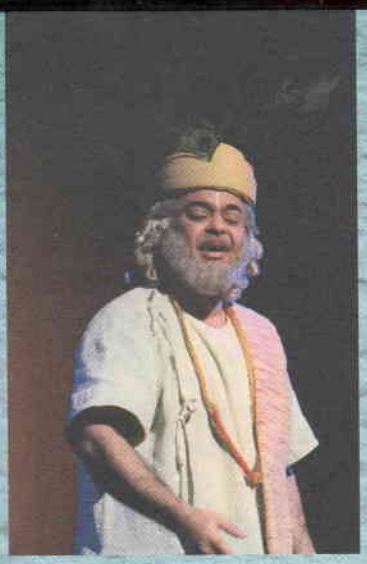

हिंदी का वैश्विक परिदृश्य

(22-24 सितम्बर 2012, जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में आयोजित नवें विश्व हिंदी सम्मेलन में प्रस्तुत आलेख)

संपादक

गिरीश्वर मिश्र

सह संपादक

प्रीति सागर सुनीति शर्मा अशोक मिश्र

राजेश कुमार यादव राजेश अरोड़ा

ज्ञान, शांति, मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

वर्धा (महाराष्ट्र), भारत

नवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन

9th World Hindi Conference

(जोहान्सबर्ग - दक्षिण अफ्रीका 22-24 सितम्बर 2012)

(Johanessburg - South Africa, 22-24 September 2012)

ज्ञान, शांति, मैत्री

प्रकाशक : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442 005 (महाराष्ट्र) भारत
वेबसाइट : www.hindivishwa.org

मुद्रक का नाम : विमल प्रिंटर्स, नागपूर

प्रकाशन वर्ष : 2015

मूल्य : ₹ 300/-

ज्ञान, शांति, मैत्री

Publisher : Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
Post : Hindi Vishwavidyalaya, Gandhi Hills, Wardha-442 005, (Maharashtra) INDIA
Website: www.hindivishwa.org

Printed by : Vimal Printers, Nagpur

Edition : 2015

Price : ₹ 300/-

नवें विश्व हिंदी सम्मेलन की संचालन समिति

प्रणीत कौर (विदेश राज्यमंत्री)

अध्यक्ष

सरकारी सदस्य

1. विदेश सचिव
2. सचिव (राजभाषा विभाग)
3. विशेष सचिव (प्रशासन)
4. संयुक्त सचिव (लोक राजनय)
5. महानिदेशक(भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्)
6. संयुक्त सचिव (ई.एण्ड एस.ए.)
7. संयुक्त सचिव (प्रशासन)
8. संयुक्त सचिव (विदेश प्रचार)
9. संयुक्त सचिव (प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय)
10. संयुक्त सचिव (शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय)
11. संयुक्त सचिव (संस्कृति विभाग)
12. संयुक्त सचिव (सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय)
13. उप सचिव (हिंदी)

गैर सरकारी सदस्य

1. कर्ण सिंह, संसद सदस्य एवं अध्यक्ष भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्
2. सत्यव्रत चुतर्वेदी, संसद सदस्य
3. जनार्दन द्विवेदी, संसद सदस्य
4. रत्नाकर पांडेय, पूर्व-संसद सदस्य, मॉरिशस स्थित विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद् के सदस्य
5. रवीन्द्र कालिया, निदेशक, भारतीय ज्ञानपीठ एवं संपादक 'नया ज्ञानोदय'
6. बालशौरि रेड्डी, दक्षिण भारत के सुविख्यात साहित्यकार, 'चंदामामा' पत्रिका के पूर्व संपादक
7. माजदा असद, पूर्व प्राध्यापक, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली
8. महीप सिंह, हिंदी और पंजाबी के सुविख्यात साहित्यकार
9. आलोक मेहता, संपादक, 'नई दुनिया'
10. विभूति नारायण राय, कुलपति - महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
11. ओम विकास, पूर्व प्राध्यापक, आई.आई.आई.टी./वरिष्ठ निदेशक, सूचना, संचार व प्रौद्योगिकी मंत्रालय
12. अनंतराम त्रिपाठी, प्रधानमंत्री, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
13. अशोक चक्रधर, उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी संस्थान
14. राकेश पांडेय, संपादक, 'प्रवासी संसार'
15. नारायण कुमार, परामर्शदाता, सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन
16. बी.एस. शांताबाई, अध्यक्ष, कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति एवं संपादक 'हिंदी प्रचार वाणी'
17. इंद्रनाथ चौधुरी, पूर्व अध्यक्ष, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला दीर्घा, निदेशक, सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली
18. टी.आर. भट्ट, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय
19. चित्रा मुदगल, सुप्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार, व्यास सम्मान से सम्मानित
20. मीरा कांत, कश्मीर से हिंदी की साहित्यकार एवं एन.सी.ई.आर.टी. के हिंदी विभाग में परामर्शदाता
21. गोपेश्वर सिंह, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
22. वी.एम. मोहम्मद कुंजू मथारू, पूर्व प्राध्यापक एवं डीन, फेकल्टी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज़, केरल विश्वविद्यालय
23. कुरबान अली, पत्रकार

वेणु राजामणि
राष्ट्रपति के प्रेस सचिव
Venu Rajamony
Press Secretary to the President

राष्ट्रपति सचिवालय,
राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली -110004
President's Secretariat,
Rashtrapati Bhavan,
New Delhi -110004

संदेश

भारत के राष्ट्रपति, श्री प्रणब मुखर्जी को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा जोहान्सबर्ग में आयोजित नवें विश्व हिंदी सम्मेलन के प्रतिवेदन का प्रकाशन किया जा रहा है। उम्मीद है कि यह प्रतिवेदन विश्व भर में हिंदी के प्रचार-प्रसार में विश्व हिंदी सम्मेलन की भूमिका पर चर्चा करने एवं उसे और अधिक प्रासंगिक बनाने में सहायक होगा।

राष्ट्रपति जी प्रतिवेदन के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देते हैं।

वेणु राजामणि
राष्ट्रपति के प्रेस सचिव

Tel. : +91-11-23016535 (Direct), 23015321 Extn 4322, Fax 23794498, E-mail-press.secy@rb.nic.in, presssecyrb@gmail.com

विदेश मंत्री एवं
प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री
भारत

सत्यमेव जयते

सुषमा स्वराज
Sushma Swaraj

Minister of External Affairs &
Overseas Indian Affairs
India

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा नवें विश्व हिंदी सम्मेलन में प्रस्तुत किए गए आलेखों को संकलित कर एक प्रतिवेदन तैयार किया गया है। अभी तक आयोजित सम्मेलनों में विभिन्न देशों के हिंदी विद्वानों एवं हिंदी प्रेमियों को परस्पर विचार–विमर्श करने के लिए न केवल एक मंच प्रदान किया है वरन् हिंदी को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित भी किया है।

मुझे विश्वास है कि महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा तैयार किया गया नवें विश्व हिंदी सम्मेलन का प्रतिवेदन हिंदी के प्रसार में सहायक सिद्ध होगा। मैं इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

सुषमा स्वराज

Ministry of External Affairs : 172, South Block, New Delhi-110011 Tel : 91-11-23011127, 23011165 Fax : 91-11-23011463
Ministry of Overseas Indian Affairs : 1001, Akbar Bhawan, Chanakyapuri, New Delhi-110021
Tel : 91-11-26876836, 24676840 Fax : 91-11-24197985

नवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन

अनुक्रम

- ❒ आयोजन समितियां 5
- ❒ राष्ट्रपति का संदेश 7
- ❒ प्रास्ताविक - गिरीश्वर मिश्र 8
- ❒ विदेश मंत्री का संदेश 10
- ❒ विदेश राज्यमंत्री का उद्घाटन भाषण 11

:: भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ ::

1. विश्व की समृद्ध भाषा हिंदी - महाश्वेता चतुर्वेदी 16
2. अन्तरराष्ट्रीय क्षितिज पर हिन्दी - रामकिशोर 18
3. भाषायी अस्मिता और हिंदी - संतोष कुमार 20
4. हिंदी की अस्मिता : राजनैतिक संदर्भ - एस.एम. इकबाल 22

:: महात्मा गांधी की भाषा-दृष्टि और वर्तमान का संदर्भ ::

5. महात्मा गांधी की भाषा-दृष्टि और वर्तमान स्थिति - अमरनाथ 24
6. समय का संवाहक : गांधी - आशीष कुमार कंधवे 28
7. गांधी और वर्तमान हिंदी - कमलेश इकबाल सिंह बख्शी 30
8. महात्मा गांधी और हिंदी - नृपेन्द्र प्रसाद मोदी 32
9. गांधी का स्व भाषा चिंतन - परविंदर कौर 35
10. भाषा हमारा प्रतिबिंब - मधु भारद्वाज 37
11. हिंदी के विविध रूप - राजबीर सिंह 38
12. महात्मा गांधी : मातृभाषा और शिक्षा का माध्यम - सुभाष चंद्र शर्मा 43
13. महात्मा गांधी की भाषा-दृष्टि - सुशीला गुप्ता 47

:: हिंदी : फ़िल्म, रंगमंच और मंच की भाषा ::

14. भाषा की संस्कृति : संस्कृति की भाषा - ओमप्रकाश सिंह 50
15. फ़िल्म, रंगमंच और हिंदी - कुसुम अंसल 52
16. हिंदी सिनेमा की लोकप्रियता का वैश्विक संदर्भ - चंद्रकांत मिसाळ 55
17. हिंदी फ़िल्मों की भाषा - नीलम राठी 58
18. हिंदी फ़िल्मों की भाषा का स्त्रीपाठ - पद्मप्रिया 60
19. कन्नड़ सिनेमा पर हिंदी का प्रभाव AK47 के संदर्भ में - भारती बी. हिरेमठ 63
20. फ़िल्म, रंगमंच और मंच की भाषा के रूप में हिंदी - मुजावर सरदार हुसैन 66

:: सूचना प्रौद्योगिकी : देवनागरी लिपि और हिंदी सामर्थ्य ::

21. सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी - अनिता ठक्कर 69
22. कम्प्यूटर और हिंदी - अशोक कुमार बिल्लूरे 71
23. हिंदी प्रसार और सूचना प्रौद्योगिकी - एस.बी. प्रभुदेसाई 74
24. कंप्यूटर और हिंदी - जगदीप सिंह दांगी 76
25. हिंदी की सामर्थ्य - प्रणव शर्मा 78
26. इंटरनेट के हाईवे पर दौड़ती देवनागरी - मनीषा कुलश्रेष्ठ 81
27. जन संचार माध्यमों का योगदान - राजेंद्र उपाध्याय 83
28. हिंदी की शक्ति - राम नरेश तिवारी 85
29. सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी - वर्षा डिसूजा 86
30. सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी की सामर्थ्य - शशिकला पांडेय 88
31. सूचना प्रौद्योगिकी और सूचना साक्षरता - सिंधु टी.आई. 90
32. सूचना प्रौद्योगिकी और नागरी लिपि - सुरेश बूरा 94

:: लोकतंत्र और मीडिया की भाषा के रूप में हिंदी ::

33. हिंदी के प्रसार में मीडिया की भूमिका - अब्दुल बिस्मिल्लाह 96
34. जनसंचार और हिंदी - उषा कुमारी 97
35. जनतंत्र की भाषा हिंदी और उसकी चुनौतियाँ - चित्तरंजन मिश्र 99
36. मीडिया की प्राणवायु : हिंदी - जवाहर कर्णावट 102
37. हिंदी पत्रकारिता के संघर्ष की दास्तान - जाकिर हुसैन 104
38. लोकतंत्र और हिंदी - पुष्पेन्द्र कुमार आर्य 107
39. हिंदी ब्लॉगिंग : कुछ पुनर्विचार - बालेन्दु शर्मा 'दाधीच' 109
40. मीडिया का वर्तमान परिदृश्य एवं हिंदी - रवींद्रनाथ मिश्र 114
41. मीडिया की भाषा के रूप में हिंदी - राजनारायण शुक्ल 116
42. लोकतंत्र और मीडिया का विकास व हिंदी - राम आह्लाद चौधरी 119
43. मीडिया और हिंदी - सुरेश कुमार श्रीचंदानी 123
44. हिंदी खेल पत्रकारिता - स्मिता मिश्र 124

:: ज्ञान-विज्ञान और रोज़गार की भाषा के रूप में हिंदी ::

46. द्वितीयक इस्पात उत्पादन के क्षेत्र में रोज़गार और हिंदी - जसबीर चावला 126
47. हिंदी का बाज़ार और बाज़ार की हिंदी - पवन अग्रवाल 128
48. रोज़गार की भाषा हिंदी - पवन जैन 133
49. व्यावसायिक हिंदी : वैश्विक रोज़गार की संभावनाएँ - वशिनी शर्मा 135
50. रोज़गाराभिमुख हिंदी : संभावनाएँ एवं दिशाएँ - सुभाष तालेकर 138

:: हिंदी के विकास में विदेशी/प्रवासी लेखकों की भूमिका ::

51. हिंदी का विकास और प्रवासी लेखन - केदार सिंह 140
52. अमेरिका में प्रवासी भारतीयों की हिंदी सेवा - कैलाश देवी सिंह 143
53. प्रवासी लेखन और हिंदी - जैतराम सोनी 146
54. हिंदी का प्रारंभिक विकास और विदेशी लेखक - प्रदीप दीक्षित 147
55. हिंदी के विकास में विदेशियों का अवदान - प्रीति सागर 150
56. हिंदी और प्रवासी लेखन - यज्ञप्रसाद तिवारी 153
57. प्रवासी महाकवि प्रो. हरिशंकर 'आदेश' की हिंदी साहित्य को देन - राजीव मलिक 155
58. हिंदी की समृद्धि में फिजी में प्रचलित लोकगीतों का योगदान - सलेश कुमार 157

:: हिंदी के प्रसार में अनुवाद की भूमिका ::

59. भारतीय साहित्य की अवधारणा में अनुवाद की भूमिका - अन्नपूर्णा सी. 160
60. भूमंडलीकरण में मशीनी अनुवाद की उपादेयता - ओमप्रकाश प्रजापति 162
61. हिंदी प्रसार और अनुवाद - कृष्ण कुमार गुप्ता 164
62. हिंदी का प्रचार-प्रसार और अनुवाद की नीतियाँ - नरेंद्र दंढारे 167
63. साहित्य : अनुवाद की समस्याएं - मंजुला दास 168
64. हिंदी के विकास में अनुवाद का योगदान - माधुरी छेड़ा 175
65. हिंदी के प्रचार में अनुवाद की भूमिका - मोहनलाल छीपा 176
66. हिंदी के विकास में अनुवाद का महत्व - मोहनदास सो. सर्लुकर 178
67. हिंदी का आरंभिक दौर और अनुवाद - वंदना भारती 180
68. हिंदी के प्रसार में अनुवाद की भूमिका - श्रीनारायण सिंह 182
69. हिंदी का विकास और अनुवाद - स्मिता चतुर्वेदी 185

:: विविध ::

70. तुर्की में हिंदी - के. सीतालक्ष्मी 187
71. विश्व में पहले स्थान पर हिंदी - जयंती प्रसाद नौटियाल 190
72. निर्मल वर्मा और प्राग - दागमार मारकोवा 193
73. विदेशों में हिंदी शिक्षण - देवेन्द्र शुक्ल 197
74. देश से विदेश तक हिंदी की यात्रा - महेश दिवाकर 201
75. रामचरितमानस और गिरमिटिया मजदूर - राजलक्ष्मी शिवहरे 205
76. हिंदी : जो कि एक स्वप्न है अभी भी... - रामेश्वर राय 206
77. हिंदी दलित साहित्य का भाषायी योगदान - श्यौराज सिंह 'बेचैन' 208
78. दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार सभा का योगदान - सुंदरम पार्थसारथी तातचारियार 212

:: अंत में ::

- नवें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित प्रस्ताव 214
- विश्व हिंदी सम्मेलन की विकास यात्रा - प्रीति सागर 216
- सम्मेलन में सम्मानित भारतीय विद्वानों का संक्षिप्त परिचय 224
- सम्मेलन में सम्मानित विदेशी विद्वानों का संक्षिप्त परिचय 227
- महत्वपूर्ण छायाचित्र 229
- संपर्क सूत्र 233

भाषिक भूमंडलीकरण में मशीनी अनुवाद की उपादेयता

❑ ओमप्रकाश प्रजापति

आधुनिक ज्ञान-विज्ञान ने आज भाषा की क्षमता में भी विस्फोट की स्थिति पैदा कर दी है। ऐसे में अनुवाद केवल सृजनात्मक साहित्य तक ही सीमित न रहकर विश्व के संपूर्ण ज्ञान-भंडार के प्रचार-प्रसार और सूचना के अंतरण का अनिवार्य और प्रबल साधन बन गया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुए विकास ने सूचना क्रांति को जन्म दिया है। मशीन रूपी रथ पर सवार होकर सूचना प्रौद्योगिकी चारों ओर व्याप्त होती जा रही है। इसके चलते वर्तमान युग 'कम्प्यूटर और इंटरनेट युग' हो गया है। इसके माध्यम से ज्ञान-विज्ञान का साहित्य पल भर में विश्व के कोने-कोने में पहुँच रहा है। सूचनाओं, जानकारियों, भावों और विचारों का आदान-प्रदान हो रहा है। इस आदान-प्रदान के साथ-साथ विश्व बाज़ारों में भाषाओं का भी आदान-प्रदान चल रहा है जिसके चलते अनुवाद की माँग बहुत बढ़ रही है। भाषा और प्रौद्योगिकी के इस संयोजन के कारण आज भाषा प्रौद्योगिकी, प्रबंधन जैसे पक्षों पर गंभीरता से विचार होना शुरू हो गया है। सूचना क्रांति ने मशीनी अनुवाद के महत्व की प्रतिष्ठा की है और उसे अधिक प्रासंगिक बना दिया है। आधुनिक युग के आरंभिक काल में अनुवाद की माँग इतनी अधिक नहीं थी, जबकि कम्प्यूटर क्रांति के कारण इसकी माँग इतनी अधिक हो गई है कि आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो पा रही है। सूचना प्रौद्योगिकी की उपलब्धियों और अनुवाद की अत्यधिक माँग की पूर्ति करने के फलस्वरूप अनुवाद के क्षेत्र में भी कई प्रयोग होने शुरू हुए।

विषय-वस्तु के स्तर पर परिवर्तन किए बिना एक भाषा की अभिव्यक्ति को यथासंभव समतुल्य और सहज रूप में दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करना अनुवाद है। यह अनुवाद व्यक्ति द्वारा तो किया ही जाता है, कम्प्यूटर के द्वारा भी अथवा कम्प्यूटर की सहायता से भी संभव है। कम्प्यूटर के जरिए किए जाने वाले इस अनुवाद को 'मशीनी अनुवाद' की संज्ञा दी जाती है। मशीनी अनुवाद के संबंध में सूरजभान सिंह का कहना है, "अनुवाद की ऐसी प्रक्रिया, जिसमें कम्प्यूटर प्रणाली (System) के जरिए एक भाषा से दूसरी भाषा में अपने आप अनुवाद हो।"[1] इसी प्रकार मशीनी अनुवाद को परिभाषित करते हुए प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी ने कहा है कि,"स्रोत भाषा की पाठ्य सामग्री का अनुवाद लक्ष्य भाषा में स्वतः हो जाता है। इसमें मूल पाठ की 'सामग्री data को कम्प्यूटर प्रणाली (system) में निवेश (input) के रूप में डाला जाता है। कम्प्यूटर की आंतरिक प्रणाली में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों के शब्दकोश, मुहावरे और व्याकरणिक नियम संचित होते हैं, जो स्रोत भाषा की सामग्री का स्वचालित अनुवाद लक्ष्य भाषा में अपने-आप करते हैं और कुछ क्षणों में अनूदित पाठ (data) निर्गम (output) के रूप में प्राप्त हो जाता है।"[2]

मशीनी अनुवाद ने भारत में भी दस्तक दी। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर (IIT) में भारतीय भाषाओं के परस्पर मशीनी अनुवाद के संदर्भ में 'अक्षर भारती' समूह ने काम प्रारंभ किया। इस समूह ने अंतरभाषा के आधार पर भारतीय भाषाओं में परस्पर मशीनी अनुवाद की संकल्पना प्रस्तुत की, ताकि भारतीय भाषाओं के 'पार्सर' (पद व्यवस्था) और 'प्रजनक' (Generator) का विकास कर विभिन्न भाषाओं के बीच अनुवाद किया जा सके। इसके अंतर्गत हिंदी, कन्नड़ और तेलुगु के पार्सर और प्रजनक विकसित किए गए। पाणिनी व्याकरण के आधार पर 'पाणिनी पार्सर' का विकास हुआ। इस प्रकार भारतीय भाषाओं में परस्पर मशीनी अनुवाद के संदर्भ में सैद्धांतिक पृष्ठभूमि तैयार हुई। सन् 1995 में इस वर्ग ने हैदराबाद विश्वविद्यालय के सहयोग से तेलुगु-हिंदी, कन्नड़-हिंदी, पंजाबी-हिंदी, बांगला-हिंदी और मराठी-हिंदी का विकास हुआ। ये अनुसारक लिनक्स (Linux) प्लेटफार्म पर तैयार किए गए।

सन् 1994 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी. कानपुर) और प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक), नोएडा के संयुक्त प्रयास से 'आंग्ल भारती' का विकास हुआ। इसमें नियम आधारित प्रणाली और उदाहरण आधारित प्रणाली दोनों का प्रयोग हुआ है। यह अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करता है। इसकी विषय सामग्री लोक स्वास्थ्य सेवा, कार्यालयी पत्राचार और तकनीकी संदर्शिका है। 'आंग्ल भारती' के दो संस्करण विकसित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त सन् 1995 में सी-डैक, मुंबई ने 'मात्रा' (MATRA) कम्प्यूटर अनुवाद उपकरण विकसित किया है, जो अंग्रेज़ी समाचार कथाओं का हिंदी में अनुवाद करता है। सी-डैक, पुणे में टैग व्याकरण प्रणाली (Tag adjoining) से 'राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के लिए राजभाषा और कार्यालयी हिंदी विषय से संबंधित 'मंत्रा' (Machine Assisted Translation) मशीनी अनुवाद का विकास किया। अंतरराष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (IIIT) हैदराबाद और हैदराबाद

विश्वविद्यालय ने संयुक्त रूप से अनुसारक पद्धति से तेलुगु से हिंदी में अनुवाद करने की मशीनी अनुवाद प्रणाली का विकास किया है, जिसमें पाणिनी व्याकरण के सिद्धांतों को आधार बनाया गया है।

सरकारी के अतिरिक्त गैर-सरकारी संस्थाओं का भी इस दिशा में विशेष योगदान है। दिल्ली की एक प्राइवेट कंपनी सुपरसॉफ्ट ने भी 'अनुवादक' नामक एक अनुवाद मशीन विकसित की है जो विशेष कोटि के सरल वाक्यों का अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करती है।

इसी श्रृंखला में 'आंग्ल भारती' प्रणाली के अंतर्गत अंग्रेज़ी से अन्य भारतीय भाषाओं के सॉफ्टवेयरों पर प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक) के पुणे, नोएडा, कोलकाता, हैदराबाद, तिरूवनंतपुरम में अंग्रेज़ी-हिंदी, अंग्रेज़ी-पंजाबी, अंग्रेज़ी-उर्दू, अंग्रेज़ी-बांग्ला, अंग्रेज़ी-मलयालम, अंग्रेज़ी - तेलुगु, अंग्रेज़ी-असमिया, अंग्रेज़ी-नेपाली आदि कई भाषाओं में मशीनी अनुवाद का विकास हो रहा है। इनके अतिरिक्त भारतीय संविधान में उल्लिखित भाषाओं और हिंदी के मशीनी अनुवाद का कार्य भी आई.आई.आई.टी. हैदराबाद के संयोजन में चल रहा है जिसमें कई संस्थाएँ कार्य कर रही हैं। 'यूनिवर्सिल नेटवर्किंग लैंग्वेज (UNL) के माध्यम से हिंदी को संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषाओं से जोड़ने के लिए आई.आई.टी. मुंबई और अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई दोनों एक साथ मिलकर काम कर रहे हैं। इसमें हिंदी से यू.एन.एल. में रूपांतरण के लिए संपरिवर्तक (Enconvertor) और यू.एन.एल. से हिंदी में रूपांतरण के लिए विपरिवर्तक (Deconvertor) भी तैयार किया जा रहा है।

इंटरनेट के विकास को बीसवीं शताब्दी की एक महत्वपूर्ण कम्प्यूटेशनल घटना माना जा सकता है। इससे "मशीनी अनुवाद को वेब अनुवाद के रूप में विकसित होने का अवसर मिला है। वेब आधारित अनुवाद के विकास से मशीनी अनुवाद के उद्देश्यों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। पहले मशीनी अनुवाद उपकरण (Translation tool) के रूप में माना जाता था किंतु वेब आधारित अनुवाद अब संप्रेषण उपकरण (Communication tool) के रूप में माना जाने लगा है।"[3] इसमें अनुवाद की परिशुद्धता पर बल न देकर संप्रेषणीयता पर बल दिया जाने लगा है। आज विश्व की महत्वपूर्ण भाषाओं में वेब आधारित अनुवाद की सुविधा है। वेब आधारित अनुवाद तंत्रों के विकास की दिशा में संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय अग्रसर है।

गूगल ने हाल ही में 'गूगल ट्रांसलेट' नाम से अनुवाद सेवा प्रारंभ की है। इस नए टूल से विश्व की अनेक भाषाओं सहित अंग्रेज़ी एवं हिंदी के शब्दों, पदों, वाक्यों, पैराग्राफ और वेबपेज का हिंदी से अंग्रेज़ी, अंग्रेज़ी से हिंदी भाषाओं में अनुवाद किया जा सकता है। यदि किसी अंग्रेज़ी पाठ्य-सामग्री, वेब पेज या हिंदी की किसी भी सामग्री के अंग्रेज़ी या हिंदी अनुवाद की आवश्यकता हो तो आपको इंटरनेट के (http://www.google.com/translate_+) पर जाना होता है। वहाँ सबसे पहले स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का चयन किया जाता है और फिर दिए गए बॉक्स में अपना शब्द या वाक्य टाइप करना होता है या कॉपी पेस्ट करना होता है और तत्पश्चात् Translate पर क्लिक करने पर तत्काल अनुवाद प्राप्त हो जाता है। इसी प्रकार जापानी और अमेरिकी अंग्रेज़ी के साथ-साथ अन्य एशियाई भाषाओं का सॉफ्टवेयर विकसित हो रहा है। इसे ए-स्टार सिस्टम (Asian Speech Translation Advanced Research) कहते हैं। इस सिस्टम में अन्य विदेशी भाषाओं को भी सम्मिलित किया जा रहा है। इस सिस्टम का संवर्धन कर इसमें अन्य 24 विदेशी भाषाएँ भी जोड़ी गई हैं, जिनमें प्रमुख रूप से यूरोपीय भाषाएँ हैं। अब इस सिस्टम को यू-स्टार (Universal Asian Speech Translation Advance Research) कहा जाता है। इसके अतिरिक्त डेनमार्क में कॉपेनहेगन बिपनिस सर्विसिज द्वारा आई ट्रेकिंग प्रणाली के आधार पर मशीनी अनुवाद का विकास हो रहा है, जिसमें डेनिस, स्वीडिश, फ्रांसीसी, पुर्तगाली, जर्मन, अंग्रेज़ी आदि यूरोपीय भाषाओं के साथ-साथ भारतीय भाषा हिंदी पर भी कार्य हो रहा है। यू-स्टार व आई ट्रेकिंग प्रणाली पर आधारित मशीनी अनुवाद आज के भूमंडलीकरण के संदर्भ में यूरोपीय और एशियाई भाषाओं में परस्पर संपर्क साधने का प्रयास कर रही है।

इस प्रकार मशीनी अनुवाद एक नई विधा है। भारत से पूर्व यूरोप और जापान में गत तीस-पैंतीस वर्ष से कार्य चल रहा है। वास्तव में मशीनी अनुवाद द्वारा तीव्र गति से अनुवाद प्राप्त किया जा सकता है। इसमें मानव अनुवादक की आवश्यकता पड़ेगी, जिससे मानव अनुवादक की दक्षता में वृद्धि तो होगी ही, साथ ही किसी के रोज़गार पर कोई अंतर नहीं पड़ेगा। भारत जैसे बहुभाषी देश में इसकी अत्यंत आवश्यकता है।

□□

' समस्त देश के लिए शिक्षा का माध्यम बनने की पात्रता यदि
किसी भाषा में है, तो राष्ट्रभाषा हिंदी में ही है। '

- आचार्य पद्मसिंह शर्मा